



दो लब्जों की कहानी या आप यू कह लो मेरी आ सचची परेम कहानी

लब्जो ही लब्जो ही मे वो अपनी ही लब्ज कह जाती मरे अन्दर बस तुम्हारा प्यार रह जाता है ।

बात उस समय की है जब मैं क्लास 6 में पढ़ रहा था मैं अपने घर को छोड़ पढ़ाई के लिए शहर को चला गया मैं वाहा हॉस्टल में रहने लगा मन तो करता की इस हॉस्टल को छोड़ कर घर को भाग जाऊ पर क्या करता मजबूरी थी मैं हॉस्टल नहीं छोड़ सकता था बाद में हॉस्टल में मन लगाने लगा और तो अब क्या अब तो हॉस्टल में ही रहना था और जब कभी स्कूल बंद होता तो मैं अपने घर को जाता और वाहा खूब मजे करता दसिम्बर खतूतम होने को था मैं अपने घर को एक बार फरि से छोड़ कर अपने हॉस्टल को चला गया अब स्कूल में छुट्टी भी खतूतम हो चुकी थी शायद मुझे ठीक से याद नहीं की जनवरी का ओ कोन सा तारकि था मैंने एक लड़की को देखा ओर देखता ही रह गया उस का चेहरा आज तक मेरी आखों में है अब मैं आगे की कहानी क्या काहू अब तो सारा दनि उसी की यादों में रहता अब मैं रोज हॉस्टल से स्कूल के लिए १ घंटे पहले ही नकाल जाता क्यो की उस खास वजह थी की उसे देखन था मैं तो उस से बात करना चाहता पर डरता था पर मैं नहीं जनता था की वो मुझेसे बात करना चाहती है य नहीं उस दनि मैं अपने हॉस्टल से स्कूल गया केमसिटेरी के टीचर का कोई होमवर्क याद करना था या कॉपी में फैंयर करना था मुझे ठीक से याद नहीं क्या की मैं भुलक्कर भी हु केमसिटेरी के टीचर क्लास रूम में आये ओर बोले चलो तुम लोग फैंयर का कॉपी नकाल लो हम सबों ने फैंयर कॉपी नकाल ली पर उस ने अपना केमसिटेरी का कॉपी घर पे ही भुल गयी थी मुझा लगा की अब तो उसे टीचर से पटिई लगेगी मेरा दलि नहीं मन रहा था टीचर ने उस से फैंयर के लिए पूछा तो वह चुप सी हो गयी मैं क्या करता मैं अपने ही जगह पर खरे हो गया ओर बोल पारा लो तुम आफ्ना फैंयर का कॉपी ले लो वह तो अब मुझे देखती ही रह गई टीचर ने बोला आगर तुम आफ्ना फैंयर इस को दथी तो बोल क्यो नहीं रही थी वह सकपका ते हुए बोली सर मुझे याद नहीं थी पर उस को बचाने के लिए मुझे मार पड़ी पर मैं पहली वार मार खा के भी बहुत खुस था क्योकि ओ मार खाने बच गयी थी अब क्या था स्कूल में छुट्टी हो चुकी थी पर मैं अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था पर हॉस्टल के छात्र को छोड़ बाकी के सभी अपने घर को चले गये थे पर ये क्या ओ तो स्कूल के कैम्पस के अंदर ही थी ओर रो रही थी मेरी नजर उस पे पड़ी मैं एक दम से दंग रह गया मैं नै उस से पूछा क्यो रो रही हो तो उस ने मुझ से झूठ कह दियी की उस के पैरो मैं चोट लग गई है मैं अपने आप को रोक न सका ओर बोल क्या तुम आफ्ना खयिल नहीं रख सकती यही मारी सब से बाड़ी भूल कहो या मेरा पागल पन उस ने मुझेसे कहा शायद तुम पागल हो मैंने बोला चलो मैं तुम्हें स्कूल के बाहर छोड़ देता हु जब मैं उसको स्कूल से बाहर को छोड़ने जा रहा था अब हम दोनों स्कूल के कैम्पस से बाहर थे वह मुझे बाय कह के जाने लगी तो मुझे लागने लगा की मेरा मुझे कोई छुट रहा है मेरा दलि तड़प पड़ा मेरे मुख से नकाल पड़ा प्लीज कम बैंक माई लाइफ डीयर शायद उसने सुन ली ओर बोली प्लीज जाने दो न मैंने बोला ठीक से जाना तो उस ने बोली ठीक है बाबा मैं ठीक से ही जाऊगी तुम भी अपना खहयिल रखना हम लोग भी स्कूल से हॉस्टल को चले गए पर उस का चेहरा मेरी आखों के सामने था फरि हम दोनों की मुलाकात स्कूल में ही हुई हम लोगो का ३ घंटी या आप यू कह लो ३ क्लास ३ घंटी कोई टीचर नहीं आये उस ने कहा तुम्हें मेरी वजह से मर पड़ी इतना कह के फरि से ओ रोन लगी मैं उसे किसी तरह चुप करा दियी पर ओ इस बात को भूलनिहीं मे क्या करता क्लासरूम में कोई नहीं था मे उसे मैंने कहा चलो ज़ीरो कट्टो खेलते है वह मान गई हम दोनों एक दूसरे को काफी अच्छी तरह से जन गये हम दोनों की बीच दनि प्रतदिनि प्यार बढ़ता जा रहा था ।

पर आचनक कुछ ऐसा हुआ की मुझे हॉस्टल छोड़ना पड़ा ओर मैं अपने घर को चला आया मैं उसे बाय भी नहीं बोल पाया ।

मैं उसका नाम तो भूल गया पर उसका चेहरा नहीं भुला पाया हु ।

वही खुली हुई बाल आखों पे चस्मा आज तक मैं उस लड़की को नहीं भूल पाया हु न ही उस लड़की को भूल पाऊंगा ।

उस समय मैं क्लास ६ में पढ़ रहा था ओर मैं क्लास बी.ए पढ़ रहाहु

जन्दिगी में ज़िदा रहने के लिये किसी की याद ही काफी है किसी से प्यार करो न की उसे बदनाम करो

मैं राहे देखूंगा कब मैं उस मलि पाऊगा पता नहीं ओ मलि भी पयेगी या नहीं

WRITEN BY STORY

BAIJU SINGH RATHOUR



Author:lovestoryinhindi
lovestoryinhindi.com

rdxbaijusinghrathour@gmail.com